: प्रथम अध्याय :

"मन्नू भंडारी के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व का सामान्य परिचय"

1.1 जीवन परिचय :-

स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में महिला कथाकारों में मन्नू भंडारी प्रथम स्थान पाती हैं। 'नई कहानी' के अंतर्गत मन्नू भंडारी का अपना एक विशिष्ट स्थान है। उन्होंने साहित्य क्षेत्र की बहुत-सी विधाओं में रचनाएँ की हैं, परंतु फिर भी कहानी साहित्य में उन्हें अधिक महारथ हासिल है। उनकी लिखी रचनाएँ आम आदमी के जीवन के इर्द-गिर्द घूमती है। इसीलिए पाठक वर्ग मन्नू भंडारी लिखित साहित्य की ओर अपने आप आकर्षित होते हैं। मन्नू भंडारी का लिखा साहित्य तो विविधताओं से भरा पड़ा तो है ही, लेकिन इसके साथ साथ उनके व्यक्तित्त्व के भी अनेक रंग हैं जो एक साथ मिलकर इस लेखिका को मन्नू भंडारी बनाए हुए हैं। उनका संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत है -

1.1.1 जन्म :-

प्रतिभाशाली लेखिका मन्नू भंडारी का जन्म 1931 में मध्यप्रदेश के एक छोटे-से गाँव भानपुरा में हुआ। मन्नू भंडारी का नाम महेन्द्रकुमारी रखा गया। परंतु घर में वे सबसे छोटी और लाडली होने के कारण उन्हें प्यार से सब मन्नू कहते और इस नाम ने आज तक उनका साथ नहीं छोड़ा।

1.1.2 माता- पिता :-

मन्नू भंडारी जैसी प्रसिद्ध लेखिका के माता-पिता बनने का सौभाग्य अनूपकुँवारी और सुखसंपत राय को मिला। मन्नू जी की माँ अनपढ़ थी। परंतु अनपढ़ होते हुए भी उन्होंने अपनी संतान को

अनपढ़ रहने नहीं दिया। वे ममता से लबालब भरी माँ तो थी ही साथ में वे पति के काम में हाथ बँटाने वाली पत्नी भी थी।

मन्नू भंडारी के पिता सुखसंपतराय हिन्दी परिभाषिक शब्द कोश के निर्माणकर्ता थे। हिन्दी साहित्य में भी वे बहुत नाम कमा चुके थे। उनका स्वभाव क्रोधी, अहंवादी और आदर्शवादी था। उन्होंने आजादी की लड़ाई में भी बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपनी बेटियों को भी स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया । तत्कालीन सामाजिक प्रथा के विरोध में उन्होंने अपनी बेटियों को अच्छी से अच्छी शिक्षा दी। मन्नू भंडारी अपने पिता के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावी रही। इसीलिए उन्होंने अपना पहला कहानी संग्रह अपने पिता को समर्पित किया।

1.1.3 भाई-बहन :-

मन्नू जी के दो बड़े भाई हैं और दो बड़ी बहनें। उनके भाई प्रसन्न कुमार और वसंत कुमार ने एम. ए तक शिक्षा ली। वे दोनों एक अच्छे पद पर नौकरी करते हैं। मन्नू जी की बहनें स्नेहलता और सुशिला ने भी बी.ए. तक की पढ़ाई पूरी की। मन्नू जी अपने भाई-बहनों को अपने जीवन में विशेष स्थान देती हैं। इसीलिए राजेन्द्र यादव जी कहते हैं -''मन्नू के लिए खुदा हैं उसके भाई-बहन, जिनमें मानवीय प्रतिभा और सद्‌गुणों का चरम विकास हुआ है।''[1]

1.1.4 शिक्षा :-

मन्नू जी की इंटर तक की शिक्षा अजमेर में हुई। अजमेर के सावित्री गर्ल्स हायस्कूल में पढ़कर मन्नू भंडारी ने सन 1945 में दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने इंटर अजमेर के कालेज से किया।

---

1. मन्नू भंडारी - श्रेष्ठ कहानियाँ - मेरा हमदम मेरा दोस्त, पृष्ठ. 19

शिक्षा के दौरान ही मन्नू भंडारी में देश प्रेम की भावना जाग उठी थी। इसीलिए वे जुलसों, आंदोलनों में भाग लेने लगी। उन्होंने कलकत्ता से सन 1949 में बी.ए किया। बी. ए. में उनका हिन्दी विषय नहीं था। इसीलिए उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी विभाग में सन 1952 में एम. ए. किया।

1.1.5 अध्यापकीय जीवन :-

मन्नू भंडारी का अध्यापकीय जीवन सन 1952 से शुरू हुआ। कलकत्ता के 'बालीगंज शिक्षा सदन' में वे सन 1961 तक अध्यापिका के पद पर कार्यरत रही। सन 1961 में कलकत्ता के राणी बिड़ला कालेज' में पढ़ाने का उन्हें मौका मिला। सन 1964 तक उन्होंने इस कालेज में पढ़ाया। इसके बाद वे दिल्ली चली आई। आगे वे दिल्ली के 'मिरांडा हाऊस कालेज' में प्राध्यापिका के रूप में लंबे अर्से तक सेवा कर वहाँ से सेवा निवृत्त हो गई।

1.1.6 हिन्दी साहित्य में आगमन :-

मन्नू भंडारी लिखित पहली कहानी है 'मैं हार गई'। यही कहानी 'कहानी' पत्रिका में पहली बार प्रकाशित हुई। सन् 1957 में मन्नू भंडारी का 'मैं हार गई' कहानी संग्रह, राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित किया इसके बाद उन्होंने और भी कहानी संग्रह प्रकाशित करवाए और वे साहित्य क्षेत्र को एक से बढ़कर एक रचनाएँ प्रदान करने लगी।

1.1.7 राजेन्द्र यादव जी से परिचय :-

एक ही क्षेत्र के दो दिग्गज लेखकों के परिचय ने उन्हें एक- दूसरे का जीवन साथी बना डाला। मन्नू भंडारी और राजेन्द्र यादव जी की मुलाकात कलकत्ता में हुई। कलकत्ते के स्कूल की लायब्रेरी में दोनों मिले, परिचय हुआ और परिचय ने प्रेम का रूप धारण कर लिया। मन्नू जी और यादव जी के परिचय

से उपजे प्रेम के विषय में डॉ. अर्जुन चव्हाण अपनी पुस्तक 'राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन' में अपना मत देते हुए लिखते हैं कि ''लेखन की वजह से राजेन्द्र यादव तथा मन्नू भंडारी का परिचय घनिष्ठता में बदल गया और घनिष्ठता का परिवर्तन प्रेम में हुआ। लेखन दोनों के बीच सेतू बनकर आया। दोनों एक-दूसरे को अपना जीवन साथी बनाना चाहने लगे।''[1]

1.1.8 विवाह :-

जब मन्नू जी और यादव जी ने विवाह करने की ठानी तो यह एक क्रांतिकारी कदम था। उन्हें मालूम था कि उनके विवाह के लिए सहमति आसानी से नहीं मिलने वाली थी। पहला विरोध मन्नू जी के पिता ने ही किया। क्योंकि वह अंतरर्जातीय विवाह था। परंतु दोनों इस विरोध की ओर ध्यान न देते हुए 22 नवम्बर, 1959 को कानूनन विवाह के बंधन में बँध गए।

1.1.9 पारिवारिक जीवन :-

17 जून, 1961 में मन्नू जी और यादव जी को पुत्री की प्राप्ति हुई और उनका परिवार खुशियों से भर गया। उन्होंने अपनी बेटी का नाम 'रचना' रखा। दोनों पती-पत्नी ने स्वयं को पति-पत्नी न मानकर एक-दूसरे का मित्र माना। राजेन्द्र यादव जी स्वयं कहते हैं - ''वह मेरे सामने पत्नी के रूप में न आकर मित्र के रूप में ही आती है----ऐसे दो मित्र जिनकी सामातंर चलती जिन्दगी एक ही छत के नीचे गुजर रही है। हमारी रूचियाँ, आदते, स्वभाव, रहन-सहन, मनोरंजन, सभी कुछ प्राय' एक दूसरे के विरोधी हैं, लेकिन उन्हें लेकर आज तक शायद ही कभी हम लोगों में मतभेद हुआ हो।''[2] मन्नू भंडारी और राजेन्द्र

---

1. डॉ. अर्जुन चव्हाण - राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन, पृष्ठ. 25

2. मन्नू भंडारी -श्रेष्ठ कहानियाँ- मेरा हमदम मेरा दोस्त, पृष्ठ. 22

यादव एक-दूसरे को समझते हुए, ख्याल रखते हुए आचरण करते हैं इसीलिए दोनों भिन्न होते हुए भी एक हैं।

1.1.10 पुरस्कार से सम्मानित :-

मन्नू भंडारी को उनके 'महाभोज' उपन्यास के लिए भारतीय भाषा परिषद ने 'रामकुमार भुवालका' पुरस्कार दिया। इसी उपन्यास को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने भी पुरस्कृत किया। शिमला के ऑल इंडिया आर्टिस्ट एसोसियेशन ने मन्नू भंडारी को मानवता सेवा के लिए 1982-83 में पुरस्कार दिया। मन्नू भंडारी को सन 1976 में 'पद्मश्री' पुरस्कार से नवाजा गया परंतु मन्नू जी ने उसे लेने से इंकार कर दिया।

1.2 व्यक्तित्त्व :-

मन्नू भंडारी का व्यक्तित्त्व मालूम करने के लिए, उनके विचार, मत, सिद्धांत, उनकी पसंद आदि बातें ज्ञात होना जरूरी है। इन्हीं सब बातों के आधारपर उनके व्यक्तित्त्व को कसौटी पर परखा जा सकता है।

1.2.1 बाहरी रूप :-

मन्नू भंडारी का बाहरी रूप अत्यंत सीधा-सादा है। उन्हें सादगी से रहना पसंद है। इस सादगी भरे जीवन में वे हमेशा साड़ी पहने रहना पसंद करती हैं। चेहरे पर गोल बड़ी बिन्दी उनकी सादगी को और निखार देती है। मध्यम कद की मन्नू भंडारी के केश जुड़े में बँधे रहते हैं। मन्नू भंडारी ने अपने बाहरी रूप में कभी कृत्रिमता को हावी होने नहीं दिया। अनीता राजूरकर मन्नू भंडारी के विषय में लिखती हैं

- ''मन्नू जी सिर्फ बिंदी से ही नहीं अपितु संपूर्ण व्यक्तित्त्व से आम घरेलू भारतीय नारी का एहसास दिलाती है।''[1]

1.2.2 आंतरिक रूप :-

मन्नू भंडारी का आंतरिक रूप उनके बाहरी रूप से कई गुणा अधिक सुरूपता लिए हुए हैं। इस बात की पुष्टि उनके अन्दर विद्यमान गुणों से होती है।

1.2.2.1 लेखन की अनोखी प्रतिभा :-

मन्नू भंडारी एक प्रतिभाशाली लेखिका हैं। उत्कृष्ट लेखन भले ही उन्हें अपने पिता से विरासत के रूप में मिला हो, परंतु इसका उत्कर्ष उन्होंने स्वयं किया है। उनकी कहानियों की विशेषता के विषय में लिखा है - ''लेकिन मन्नू की कहानियों की दो विशेषताएँ उसे अपने समकालीनों से अलग करती हैं ---व्यर्थ के भावोच्छ्वास में नारी के आँचल का दूध और आँखों का पानी दिखाकर उसने पाठकों की दया नहीं वसूली ---वह एकदम यथार्थ के धरातल पर नारी की दृष्टि से अंकन करती है ---लेकिन अन्य 'यथार्थवादियों' की तरह शिल्पगत परिमार्जन या कहानी के आधारभूत कलात्मक संयम को भी हाथ से नहीं जाने देती ---- वे 'परफैक्ट' कहानियाँ है ---आधुनिक पाठक की कलारूचि पर खरी उतर सकनेवाली कहानियाँ हैं, पुराने पाठक के लिए रोचक और सहज ----।''[2] इससे पता चलता है कि मन्नू जी के कहानियाँ यथार्थता पर आधारित होने के कारण पाठक उससे सुगमता से तादातम्य कर सकते हैं। मन्नू भंडारी का कथा साहित्य मौलिकता से युक्त है। राजेन्द्र यादव कहते हैं- ''प्लॉट मन्नू के दिमाग में हमेशा ही

---

1. अनीता राजूरकर - कथाकार मन्नू भंडारी, पृष्ठ. 7

2. मन्नू भंडारी -श्रेष्ठ कहानियाँ- प्रमुख स्वर, पृष्ठ. 5

बहुत मौलिक और सशक्त आते हैं।''[1] उनकी मौलिकता में भी सहजता है। इसीलिए राजेन्द्र ने कहा है - ''और मन्नू की जिन बातों की मैं बहुत- बहुत इज्जत करता हूँ उनमें उसके लिखने का तरीका, उसकी सहजता और निर्व्याज आत्मीयता का प्रवाह है।''[2] मन्नू भंडारी को जहाँ थोड़ा समय मिलता हैं, वे उसका पूर्ण उपयोग करके कहानी लिख लेती हैं।

1.2.2.2 अल्प सुखी :-

मन्नू भंडारी श्रेष्ठ और प्रसिद्ध लेखिका होते हुए भी अल्प सुखी है। अत्यंत छोटी-छोटी बातों में भी वे स्वर्ग से अधिक खुशी पाती हैं। राजेन्द्र जी मन्नू भंडारी की खुशी के विषय में लिखते हैं - ''उसके लिए सुबह- शाम कभी भी बैठकर बातें करना ही सुखी होना है। दो दिन अगर ऐसा न हो तो तीसरे दिन अकेली लेटी मन्नू रोती दिखाई देगी।''[3] स्वयं मन्नू जी अपने- आपको भाग्यशाली कहते हुए लिखती हैं - ''मुझे ? मुझे अच्छा लगता है, हम लोग साथ चाय पिएँ, बैठकर साहित्य- चर्चा करे----यही तो एक बात है जहाँ मैं अपने- आपको औरो से भाग्यशालिनी समझती हूँ।''[4] मन्नू जी को सुख खोजने के लिए इधर-उधर भागदौड़ नहीं करनी पड़ती। इसे तो वे अपने घर में ही पा लेती हैं। इसीलिए तो वह कहती हैं - ''मैं कहीं भी हो आऊँ, स्वर्ग में भी मुझे तो अपना यही घर अच्छा लगता है।''[5]

---

1. मन्नू भंडारी - श्रेष्ठ कहानियाँ - मेरा हमदम मेरा दोस्त, पृष्ठ. 17
2. वही, पृष्ठ. 17
3. वही, पृष्ठ. 15
4. वही, पृष्ठ. 16
5. वही, पृष्ठ. 16

1.2.2.3 निडरता :-

मन्नू भंडारी में निडरता कूट-कूट कर भरी हुई है। इसी कारण उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में नारे लगाएँ हैं। मन्नू जी की निडरता इस कथन से सिद्‌ध होती है-''श्रम ओर सैक्स के दुहरे जटिल-शोषण के संस्कारों के जाल से नारी के मौलिक और स्वतंत्र व्यक्तित्त्व की खोज निकालने के लिए जिस साहस और निर्भिकता की आवश्यकता है, वे ही मन्नू के सबसे सशक्त हथियार है----''[1] मन्नू की इस निड़रता को मानते हुए राजेन्द्र यादव कहते हैं- ''साहस का यह हाल है कि बड़े- से बड़े आदमी के मुँह पर टके-सा जवाब पकड़ा देगी, लाख विरोधों के बावजूद अपने मन का करेगी (मेरे साथ शादी इसी दुस्साहस का परिणाम है) अत्यंत निर्भयता और निडरता से जो कहना होगा कहेगी।''[2] मन्नू जी इतनी निड़र होते हुए छिपकली के सामने उनकी निडरता नष्ट हो जाती है।

1.2.2.4 स्वच्छता की कायल :-

मन्नू भंडारी को स्वच्छता बहुत प्रिय है। गन्दगी को वे कभी बर्दाश्त नहीं करती। इसीलिए यादव जी लिखते हैं- ''लेकिन अगर बस चले तो सारे समय नौकर से या तो बर्तन चमकवाया करे या फर्श पुछवाया करे। 'मेज पर यह दाग क्यों है? ये प्लेट साफ हुई है ? ये तौलिया रखने की जगह है ?' अगर मैं विरोध न करूँ तो मुझे भी 'विम' से मँजवाकर साफ- सुथरा रखा करे।''[3]

1.2.2.5 मन्नू की नापसंद बातें और चीजें :-

ऐसी बहुत सी बातें हैं जो मन्नू जी को कतई पसंद नहीं हैं। उन्हें ऐसे आदमी पसंद नहीं

---

1. मन्नू भंडारी - श्रेष्ठ कहानियाँ- प्रमुख स्वर, पृष्ठ. 5
2. मन्नू भंडारी - श्रेष्ठ कहानियाँ- मेरा हमदम मेरा दोस्त , पृष्ठ. 22-23
3. वही, पृष्ठ. 13

जो जोरु के गुलाम हो। इसीलिए वे कहती हैं - "त्थू, वो भी भला कोई आदमी है !मैं ऐसे आदमी के साथ एक दिन भी न रहूँ --- अगले दिन तलाक दे दूँ। बी. जी।" बी. जी. यानी बीवी का गुलाम। ऐसे आदमियों से मुझे बड़ी चिढ़ होती है जो औरतों के कामों में दिलचस्पी लें, औरतों जैसी बातें करें। आज मेजपोश ला रहे हैं, कल रंग करा रहे हैं, परसो---।"[1] मन्नू जी को बिन बुलाए मेहमान कभी अच्छे नहीं लगते। उन्हें भीड़-भाड़ में रहना भी पसंद नहीं है। उन्हें अधिकतर अकेले रहना ही पसंद है। मन्नू जी को सब्जियों में बैंगन, काशीफल, कटहल, गोभी, लहसून, करेला, भिंडी, जिमीकन्द बिल्कुल पसंद नहीं हैं। मीठा खाना भी उन्हें पसंद नहीं है।

1.2.2.6 उदारता :-

मन्नू भंडारी में नि:स्वार्थ उदारता ने अपना अस्तित्त्व टिका कर रखा है। मन्नू भंडारी के व्यक्तित्त्व में यह गुण महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। मन्नू जी ने ऐसी कोई चीज नहीं छोड़ी जो उदारता से लुटाई न हो। कुली, रिक्शेवाले, टैक्सीवाले, दूकानदार यहाँ तक कि ठग भी उनके पास से खाली हाथ नहीं लौटे। मन्नू जी के घर से जब गहने चोरी गए तो मन्नू जी ने कहा - "चलो पाप कटा, मुझे यों भी गहनों का शौक नहीं है।"[2] मन्नू जी के इसी गुण के सामने यादव जी अपने आपको बेहद छोटा महसूस करते हैं।

1.3 कृतित्त्व :-

साहित्यकार मन्नू भंडारी के लेखन कौशल्य को एक ऊँची सिद्धता प्राप्त हो चुकी है। उनकी रचनाएँ ही यह बयान करती हैं कि उनका स्थान सबसे अलग है।

---

1. मन्नू भंडारी - श्रेष्ठ कहानियाँ- मेरा हमदम मेरा दोस्त , पृष्ठ. 14
2. वही, पृष्ठ.23

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

मन्नू भंडारी स्वातंत्र्योत्तर काल की ऐसी प्रथम लेखिका हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में नारी के परंपरागत रूप को झटककर उसमें नवीनता लाने का प्रयास किया। यह नवीनता केवल कोरी कल्पनाओं पर आधारित नहीं थी, अपितु इसमें यथार्थता को भी उचित स्थान दिया गया। मोहन गुप्त मन्नू जी के नारी पात्रों के विषय में लिखते हैं कि ''मन्नू भंडारी ने नारी- मनोविज्ञान को बहुत बारीकी से चित्रित किया है। 'भारतीय नारी' के तथाकथित आदर्शों के घटाटोप में छटपटाती नारी की आशाओं, आकांक्षाओं और लालसाओं को उन्होंने निर्भ्रान्त वाणी दी है, जिसमें उनके नारी-पात्र 'भारतीय नारी के आर्केटाइप न रहकर अपने स्वतंत्र अस्तित्व का उद्‌घोष करते दिखायी देते हैं।''[1] मन्नू भंडारी की रचनाओं में नारी संवेदनाओं को पूरी ईमानदारी के साथ चित्रित किया गया है।

1.3.1 रचनाओं पर बनी फिल्में :-

मन्नू भंडारी की रचनाओं को फिल्म का रूप भी मिल चुका है। मन्नू भंडारी लिखित 'त्रिशंकु' कहानी पर आधारित 'त्रिशंकु' नामक फिल्म के साथ साथ 'एखाने आकाश नाय' इस कहानी पर आधारित फिल्म 'जीना यहाँ' तथा 'यही सच है' कहानी पर आधारित फिल्म 'रजनीगंधा' बासू चटर्जी ने बनाई। इन दोनों फिल्मों के विषय में मन्नू भंडारी लिखती हैं - "मेरी कहानी 'एखाने आकाश नाय ' (यह कहानी 1963 में सारिका में 'आकाश के आईने में' शीर्षक से प्रकाशित हुई थी।) मेरी नजर में बहुत अच्छी कहानी है। उस पर फिल्म बनी 'जीना यहाँ'। लेकिन वह चली नहीं। उसका पूर्वाद्‌ध बहुत कमजोर था, उतरादर्ध मास्टरपीस था। हालाकि इसे बहुत अच्छी बनना चाहिए था लेकिन अच्छी और सफल बनी 'रजनीगंधा'। 'रजनीगंधा' में बासू ने कहीं कहीं बहुत ज्यादा लिबर्टी ली है।"[2] मन्नू भंडारी के उपन्यास

1. मोहन गुप्त - प्रतिनिधि कहानियाँ- अंतरंग आत्मीयता की कहानियाँ, पृष्ठ. 7
2. मन्नू भंडारी -सारिका, फरवरी 85, पृष्ठ. 22

'स्वामी' पर भी 'स्वामी' नामक फिल्म बन चुकी है। मन्नू भंडारी ने उपन्यास और नाटक भी लिखे हैं। परंतु उनकी लिखी कहानियों की मात्रा अधिक है और इस कहानी साहित्य में नारी विषयक अधिक कहानियाँ हैं। उनकी लिखी रचनाओं की तालिका इस प्रकार है।

1.3.2 कहानी संग्रह :-

कहानी संग्रह	प्रकाशक	वर्ष
1. मैं हार गई	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	1957
2. तीन निगाहों की एक तसवीर	श्रमजीवी प्रकाशन, इलाहबाद	1959
3. यही सच है	अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली	1966
4. एक प्लेट सैलाब	अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली	1968
5. त्रिशंकु	अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली	1978

मन्नू जी की कहानियों को अलग से इन कहानी संग्रहों में भी प्रकाशित किया गया है।

1. श्रेष्ठ कहानियाँ	अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली	1969
2. मेरी प्रिय कहानियाँ	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	1979
3. सप्तपर्णा	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली	1982

मन्नू जी के उपन्यास इस क्रम में प्रकाशित हो चुके हैं।

1.3.3 उपन्यास :-

उपन्यास	प्रकाशन	वर्ष
1. एक इंच मुस्कान (राजेन्द्र यादव जी के साथ)	राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली	1963
2. आपका बंटी	अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली	1971
3. महाभोज	वाणी प्रकाशन, दिल्ली राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	1980
4. स्वामी	नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली	1982

1.3. 4 किशोरोपयोगी साहित्य :-

1. आँखो देखा झूठ (बाल कहानियाँ) 1976

2. कलवा (बाल उपन्यास) 1971

1.3.5 नाटक :-

इन विधाओं के साथ मन्नू भंडारी ने दो नाटक भी लिखे।

1. बिना दीवारों के घर	1966
2. महाभोज (नाट्य रूपांतर)	1983

निष्कर्ष :-

साहित्यिक वातावरण में जन्मी मन्नू भंडारी ने साहित्य रचना ही अपना उद्देश्य रखा। इस उद्देश्य के लिए उन्हें अपने परिवार से भी प्रोत्साहन मिला और विवाह के बाद पति से भी। मन्नू भंडारी एक

संवेदनशील व्यक्ति हैं। क्योंकि स्कूली जीवन में ही उन पर आजादी के आंदोलन का प्रभाव पड़ चुका था। इस संवेदनशीलता के कारण ही वे अध्यापिका के पद से होते हुए साहित्यिक के पद पर विराजमान हुई। मन्नू भंडारी साहसी औरत हैं, उन्होंने अपने पिता और समाज के विरुद्ध प्रेम विवाह किया। अपने जीवन में उन्होंने लगभग नारी के सभी रूपों को तन्मयता से निभाया है। प्रसिद्धी के शिखर पर पहुँचकर भी उन्होंने सादगी को नहीं छोड़ा। यह उनके व्यक्तित्व का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है। मन्नू भंडारी एक सफल साहित्यकार हैं। इस बात की पुष्टि उन्हें मिले पुरस्कार और उनकी रचनाओं पर बनी फिल्मों से भी हो जाता है। मन्नू भंडारी का व्यक्तित्व अनेक गुणों से भरा पड़ा है।

मन्नू भंडारी द्वारा लिखित साहित्य में कहानी साहित्य अधिक मात्रा में लिखा गया है। उनके साहित्य में वैसे तो स्त्री विषय ही केन्द्र बिन्दु है, परंतु समाज के लगभग सभी वर्ग को उन्होंने अपने साहित्य में चित्रित किया है। साहित्यिक रचनाओं के विषयों में भी विविधता झलकती है। उनके साहित्य में राजनीतिक उपन्यास भी हैं और कहानियाँ भी। उनके साहित्य में स्त्री-पुरूष संबंध के विषय भी हैं। कहीं बाल मनोविज्ञान पर कथा आधारित है तो कहीं वृद्ध स्त्री की मानसिकता को चित्रित किया है।

मन्नू भंडारी का साहित्य आज भी पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। स्वातंत्र्योत्तर काल में लिखी रचनाएं आज भी प्रासंगिक हैं। इस उपर्युक्त विवेचन से यही सिद्ध होता है कि मन्नू भंडारी सादगी में लिपटी एक ऐसी साहित्यकार हैं जिन्होंने सफलता की ऊँचाइयों पर बैठकर हिन्दी साहित्य जगत को अपनी लेखनी से नवीनता और विकास का मार्ग दिखाया।

****